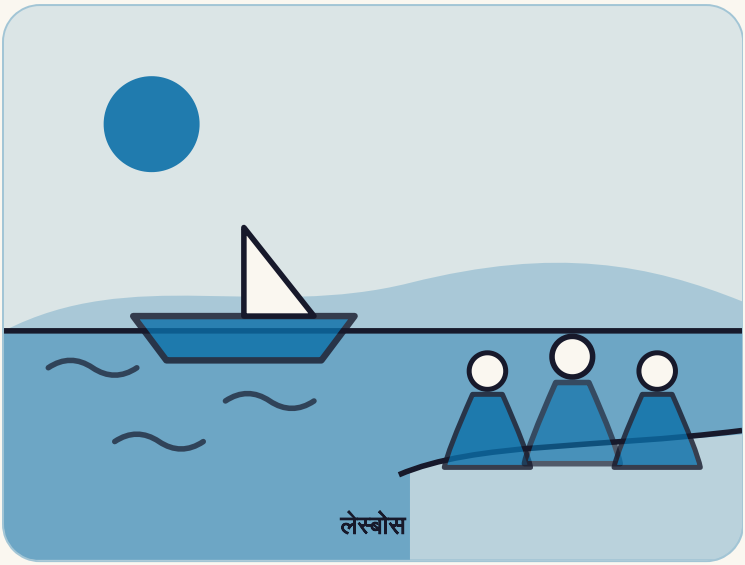

ग्रीस

वे दादियाँ जो नावों से मिलने गईं

तीन बहुत बूढ़ी औरतें शरणार्थियों का स्वागत करने किनारे तक गईं। उनकी अपनी माँएँ भी कभी शरणार्थी थीं।

कहाँ स्काला सिकामिनिआस, लेस्बोस

कौन लेस्बोस की तीन दादियाँ: एफ़स्त्रातिया मावरापिदू, मारित्सा मावरापिदू और मिलित्सा कामवीसी

कब 1922 से 2022

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

स्काला सिकामिनिआस ग्रीस के लेस्बोस द्वीप का एक छोटा मछुआरों का गाँव है। 2015 में शरणार्थियों से भरी नावें और बेड़े इसके किनारे पर उतरने लगे। शरणार्थी वे लोग होते हैं जो सुरक्षित रहने के लिए अपना घर छोड़कर भागते हैं। इनमें से कई सीरिया, इराक़ और अफ़ग़ानिस्तान की जंग से भागे थे।

गाँव की तीन बहुत बूढ़ी औरतें किनारे तक गईं। एफ़स्त्रातिया मावरापिदू की आँखों में मोतियाबिंद की धुंध थी। वे छड़ी लेकर चलती थीं। मारित्सा मावरापिदू और मिलित्सा कामवीसी भी साथ आईं।

माँएँ, जो ख़ुद वहाँ से गुज़री थीं

वे जानती थीं कि नए आने वाले क्या महसूस करते हैं। उनकी अपनी माँएँ भी शरणार्थी बनकर लेस्बोस आई थीं। 1922 में एक जंग के बाद कम से कम दस लाख ग्रीक लोगों को तुर्की से निकाल दिया गया था।

एफ़स्त्रातिया की माँ, एवांथिया, उसी समंदर को मछली पकड़ने वाली एक भरी हुई नाव में पार करके आई थीं। उनके तीन छोटे बेटे थे। सबसे छोटा एक महीने का था। उसे कपड़े पहनाने का वक़्त नहीं था, इसलिए उन्होंने अपने पेटीकोट का एक हिस्सा फाड़कर उसे लपेट लिया।

गाँव में उनके लिए कोई घर नहीं था। परिवारों ने ख़ाली शेड साफ़ किए, जहाँ ज़ैतून रखे जाते थे, और उन्हीं में सोए।

> ऐसा लगा जैसे हमारी माँएँ भी उस किनारे पर थीं और उसे गले लगा रही थीं।
>
> एफ़स्त्रातिया मावरापिदू, NPR में उद्धृत

1922	1 million	3
जिस साल उनकी माँएँ शरणार्थी बनकर आईं	एक साल में ग्रीस के तटों पर उतरे लोग (NPR)	मशहूर तस्वीर में औरतें

उन्होंने क्या किया

कई महीनों तक वे औरतें किनारे जाती रहीं। उन्होंने अपनी अलमारियों से कपड़े बाँटे। उन्होंने घर के बने पनीर के पाई बाँटे। जब कोई समुद्री बीमारी से बेहाल आदमी नाव से उतरता, तो वे उसे गले लगा लेतीं।

एक स्थानीय फ़ोटोग्राफ़र ने उन तीनों की तस्वीर खींची। उसमें मिलित्सा एक शरणार्थी बच्चे को थामे हैं, और बच्चे की माँ सूखे कपड़ों में मुस्कुरा रही है। वह तस्वीर पूरी दुनिया में फैल गई।

ग्रीस के राष्ट्रपतियों ने बाद में उनका शुक्रिया अदा करने के लिए उनसे मुलाक़ात की। मिलित्सा को 2016 के नोबेल शांति पुरस्कार, एक बड़े विश्व-पुरस्कार, का उम्मीदवार बताया गया। यह उन्हें हैरान कर गया। उन्होंने कहा, “हम तो बस इंसानों की तरह पेश आ रहे थे।”

तीनों में से दो अब नहीं रहीं: रिपोर्टों के मुताबिक़ मारित्सा 2019 में और एफ़स्त्रातिया 2022 में।

कब क्या हुआ

- **1922** उनकी माँएँ शरणार्थी बनकर लेस्बोस आती हैं।
- **2015** शरणार्थियों की नावें गाँव में उतरती हैं। तस्वीर खींची जाती है।
- **2016** मिलित्सा को नोबेल शांति पुरस्कार का उम्मीदवार बताया जाता है।
- **2019** मारित्सा मावरापिदू का निधन (रिपोर्टें)।
- **2022** एफ़स्त्रातिया मावरापिदू का निधन (रिपोर्टें)।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

उन्होंने अजनबियों की मदद इसलिए की क्योंकि वे अपनी माँओं की कहानियों से जानती थीं कि कुछ भी लिए बिना पहुँचना क्या होता है।

उन्होंने कोई कार्यक्रम नहीं चलाया। उन्होंने वही इस्तेमाल किया जो उनके पास था: कपड़े, पनीर के पाई और खुली बाँहें।

हमारी राय

उनके अपने परिवार की तकलीफ़ मदद करने की वजह बनी, नज़र फेर लेने की नहीं।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 अपने अतीत को रास्ता दिखाने दीजिए

उनकी माँएँ शरणार्थी रही थीं, इसलिए वे जानती थीं कि नए आने वालों को क्या चाहिए।

यह आज़माएँ: अपने किसी कठिन दौर को याद कीजिए। जो एक चीज़ तब आपके काम आई थी, वह आज किसी को दीजिए।

2 जो आपके पास है, वही दीजिए

उन्होंने अपनी अलमारियों से कपड़े और घर के बने पनीर के पाई दिए।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते अपनी एक काम की चीज़ किसी ज़रूरतमंद को दीजिए।

3 ख़ुद पहुँचिए

एफ़स्त्रातिया कमज़ोर थीं और उनकी नज़र धुँधली थी, फिर भी वे छड़ी लेकर किनारे तक गईं।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते एक छोटी मदद संदेश से नहीं, ख़ुद जाकर कीजिए।

4 पहले छोटे क़दम से शुरू कीजिए

उन्होंने बेहाल, डरे हुए लोगों को गले लगाया। वे किसी योजना का इंतज़ार नहीं करती रहीं।

यह आज़माएँ: जब किसी को जूझते देखें, तो सबसे पहली छोटी मदद कर दीजिए।

साथ ले जाने वाली एक बात

दया उन्हें सबसे आसान लगती है जिन्हें पहुँचना याद है।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

NPR
For These Greek Grandmas, Helping Migrants Brings Back Their Own Past (2016)

Greek City Times
Efstratia Mavrapidou: "Yiayia of Lesvos" and Nobel Peace nominee died at the age of 96 (2022)

The Greek Herald
Efstratia Mavrapidou, one of the famous 'Lesvos grandmas,' passes away aged 96 (2022)

Gariwo
Emilia Kamvisi, the grandmother of Lesvos

तथ्य-जाँच नोट: स्रोत मुख्य कहानी पर सहमत हैं और ब्योरों में अलग हैं। नोबेल शांति पुरस्कार: NPR कहता है कि मिलित्सा कामवीसी को नामित किया गया; Greek City Times और Greek Herald कहते हैं कि तीनों औरतों को; Gariwo कहता है कि कामवीसी लेस्बोस के एक मछुआरे, स्ट्रातोस वालियामोस, के साथ उम्मीदवार थीं। नोबेल समिति 50 साल तक नामांकन प्रकाशित नहीं करती, इसलिए ये मीडिया की रिपोर्टें हैं। कहानी सिर्फ़ इतना कहती है कि मिलित्सा को उम्मीदवार बताया गया। उम्र और मृत्यु की तारीख़ें अलग हैं: NPR (2016) एफ़स्त्रातिया के लिए 89, मारित्सा के लिए 85 और मिलित्सा के लिए 83 बताता है; 2022 की रिपोर्टें कहती हैं कि एफ़स्त्रातिया 96 की उम्र में गुज़रीं और मारित्सा जनवरी 2019 में 92 की उम्र में; Gariwo कामवीसी के वर्ष 1934 से 2023 देता है, जबकि 2022 की एक रिपोर्ट ने उन्हें जीवित बताया। संख्याएँ मेल नहीं खातीं, इसलिए कहानी कोई उम्र और मिलित्सा की मृत्यु की कोई तारीख़ नहीं देती। वर्तनी अलग-अलग है: Kamvysi, Kamvisi, Sikaminias, Sykamia। 1922 का निष्कासन और “कम से कम दस लाख” का आँकड़ा NPR का है; Gariwo कहता है कि कामवीसी का परिवार 1922 में तुर्की से भागा। एक साल में ग्रीस के तटों पर उतरे “1 million” लोग 2015 से 2016 की शुरुआत के लिए NPR का आँकड़ा है। उद्धरण और पेटीकोट वाला ब्योरा NPR से है, जैसा एफ़स्त्रातिया ने सुनाया। “ग्रीस के राष्ट्रपतियों” का मतलब 2015 में तत्कालीन राष्ट्रपति की और 2020 में मौजूदा राष्ट्रपति की मुलाक़ात है (Greek City Times)। फ़ोटोग्राफ़र को सिर्फ़ स्थानीय बताया गया है। बाद के शिविर और यूरोपीय संघ-तुर्की समझौता कहानी में शामिल नहीं हैं। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।